अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर

महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान

एवं

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर द्वारा आयोजित

साप्ताहिक योग प्रशिक्षण शिविर एवं योग-अध्यात्म-शैक्षिक कार्यशाला

15 से 21 जून, 2019 श्रीगोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

प्रकाशनार्थ

गोरखुपर 18 जून। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय योग शिविर के शैक्षिक कार्यशाला में चतुर्थ दिवस में मुख्य वक्ता पतंजलि योग संस्थान, गोरखुपर के संचालक डॉ. हरिनारायण धर दूबे ने अपने उदबोधन में बताया कि विज्ञान एवं योग विषय बहुत ही धार्मिक है। योग की भौतिक शास्त्र या विज्ञान से परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि योग हमारी पराविद्या है और विज्ञान एक शोध का विषय है। जिसका संचालन किसी व्यक्ति के द्वारा किया जाता है लेकिन योग हमारा पुरातन आध्यात्मिक क्रिया है इसको प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता और न ही इसके योग विद्या को प्रारम्भिक या अन्त का विश्लेषण हो सकता। हठ योग क्रिया से अनेक बिमारियों का नाश होता है इसे विज्ञान नहीं दे सकता। विज्ञान कारण का अन्वेषण कर सकता है लेकिन उसका निदान हमारा योग ही दे सकता है जैसे कोलेस्ट्राल आदि रोग को बिना किसी औषधि के योगाभ्यास द्वारा हम मुक्त हो सकते हैं। भारतीय चिकित्सा शास्त्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सा शास्त्र अपने शोध के द्वारा यह निर्णय करते है कि रोग का प्रतिरक्षण क्षमता किसी औषधि में उतना प्राप्त नहीं होता जितना योगाभ्यास क्रिया से प्राप्त होता है। योग प्रभावी है रोग के लिए, लेकिन रोग के लिए औषधि सेवन करना किसी एक रोग का निवारण करने में सहयोग दे सकता है लेकिन वह औषधि दुसरे रोग को उत्पन्न कर सकता है लेकिन योग रोग को समाप्त करके निरोग बनाता है। जिसे हमारे ऋषि, महर्षियों ने समाज को दिया है। यौगिक क्रियाओं का कार्य समत्व योग उच्चते का सूत्र चरित्रार्थ करता है। हमारी संतुलन को केन्द्रित करने का अगर कोई विद्या है तो वह योग है। स्वास, प्रस्वास की जो गति है उस गति को नियंत्रण करने का कार्य योग करता है। नार्वे की योग पत्रिका ने स्पष्ट लिखा कि अनुवांशिक रोग का निवारण एवं पराम्परागत रोग का निवारण हठयोग की क्रियाओं से सम्भव है। प्रकाश की उर्जा को बढ़ाने, ज्योति को विकसित करने के लिए ध्यान की क्रिया को करने से नेत्र ज्योति का विकास होता है। विज्ञान मूलाधार चक्र को मानने के लिए तैयार नहीं था लेकिन अपने शोध में विज्ञान ने स्वीकार किया है। आज के दो सौ वर्ष पहले हमारी यौगिक क्रिया थी लेकिन हमारे पास शिक्षा का अभाव था जिससे हमारा समाज उस यौगिक क्रियाओं के बारे में अनभिज्ञ थे लेकिन आज विज्ञान शोध करके हमारी प्राच्य विद्या को प्रदर्शित कर रहा है तथा हमारी प्राच्य विद्या को चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकार करके यौगिक क्रियाओं के प्रति नतमस्तक है। विज्ञान का कहना

है कि बिना किसी दवा के योग यदि सकुशल गुरू के निर्देश में नित्य अभ्यास करता है उसे दवा की आवश्यकता नहीं होती, जीवन रक्षण की क्षमता योग से प्राप्त हो जाता है। राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं आध्यात्म का उदगम योग कि विद्या है जिसको विज्ञान नहीं दे सकता। वैज्ञानिक शोध किसी विषय पर अपना मत स्थापित करता है जिसका निदान योग ही दे सकता है। डॉ. द्विवेदी जी महर्षि पतंजलि योग संस्थान के संचालक है उनका कहना है कि विज्ञान से योग नहीं अपित योग से विज्ञान है। कार्यक्रम की अध्यक्षता गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी ने किया। मंच पर डा0 अरविन्द्र चतुर्वेदी ने अपना विचार रखा। आए हुए अतिथियों का आभार योग शिविर संचालक डॉ. चन्द्रजीत यादव ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अभिषेक पाण्डेय ने किया। इसके पूर्व प्रातः 6 से 8 बजे तक योगाचार्य डॉ. चन्द्रजीत यादव के निर्देशन में योग प्रशिक्षुओं नें सूर्य नमस्कार, सूक्ष्म यौगिक

व्यायाम सभी जोड़ों, उदर शक्ति विकासक क्रिया, तड़ासन, त्रियक तड़ासन, कटि चक्रासन, वृक्षासन, गरूणासन, वीर्य स्तम्भासन तथा प्राणायाम किया।

योग शिविर के कार्यक्रम में दीपनरायण भास्कर त्रिपाठी, डॉ. महेश शरण, रणंजय सिंह, विनय गौतम, सर्वेश कुमार, महिला पतंजलि योग समिति गोरखपुर की श्रीमती विनीता यति, श्रीमती आकांक्षा यति, श्रीमती प्रियंका पुरी, श्रीमती आशा शर्मा, श्रीमती वर्षा चावला, श्रीमती रेनू, श्रीमती अनुराधा भारती, श्रीमती लता महयान, श्रीमती नीलम चावला, अजय कुमार, प्रमोद यादव, अनिल यादव, बृजेशराम त्रिपाठी शुभम, कमलेश, देवेन्द्र, महेन्द्र, रविन्द्र, आदि उपस्थित रहें। कार्यक्रम में यौगिक क्रिया को सम्पादित करने वाले अनेक साधु, महात्मा तथा गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य, उपाचार्य, शिक्षक,व छात्र उपस्थित रहे।